अध्याय 10

रागों का शास्त्रीय वर्णन

राग भैरवी

राग भैरवी भैरवी थाट का ही आश्रय राग है। इसके मूल स्वरूप में रे, ग, ध व नि कोमल है। इस राग की जाति संपूर्ण संपूर्ण है। राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। यदि संगीत के समय सिद्धांत की दृष्टि से देखे तो चूंकि यह उत्तरांग वादी राग है अतः इसके गायन/वादन का समय प्रातः कालीन ही होना चाहिए परन्तु ऐसी परम्परा ही बन गई है कि किसी भी गोष्ठी या कार्यक्रम का समापन भैरवी राग से ही किया जाता है। भैरवी एक क्षुद्र प्रकृति का राग है। इस राग में वैसे तो ऊपर बताऐं गए स्वरों का प्रयोग होता है। परन्तु व्यवहार में भैरवी राग में समस्त बारह स्वरों का प्रयोग होता है।

थाट – भैरवी

स्वर – रे ग ध नि कोमल म शुद्ध

वर्जित स्वर – कोई नहीं

जाति – संपूर्ण–संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड्ज

गायन समय – किसी भी समय (कार्यक्रम की समाप्ति के समय)

आरोह – सा <u>रे</u> <u>ग</u>, म प, <u>धनि</u> सां

अवरोह – सां <u>नि</u> <u>ध</u>, प, म, <u>ग</u>, <u>रे</u>, स

राग भूपाली

राग भूपाली कल्याण थाट जनित राग है। यह भी एक अंत्यत लोकप्रिय राग हैं। इस राग में मध्यम व निषाद स्वर वर्जित है। इसकी जाति औड़व–औड़व है। शेष प्रयुक्त होने वाले सभी स्वर शुद्ध हैं। वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर धैवत है। मालकौंस राग की भांति यह राग भी प्रारम्भिक शिक्षार्थियों के लिए सरल और सुगम है।

राम भूपाली का समप्रकृति राग देशकार है। दोनों के स्वर समान है। परन्तु देशकार में वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। भूपाली कल्याण अंग का राग है जबकि देशकार बिलावल अंग का राग है।

राग भूपाली के न्यास के स्वर हैं– सा, रे, ग

थाट – कल्याण

वर्जित स्वर – म व नि,

जाति – औड़व–औड़व

स्वर – समस्त प्रयुक्त स्वर शुद्ध है।

वादी – गंधार

संवादी – धैवत

आरोह – सा रे ग, प ध सां

अवरोह – सां ध, प, ग, रे, सा

मुख्य स्वर समुदाय – ग रे सा, ध़ सा रे ग, प ग, ध प, ग रे सा

राग खमाज

राग खमाज बहुत मधुर एवं लोकप्रिय राग है। यह खमाज थाट का आश्रय राग है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते है। शेष स्वर शुद्ध है।

आरोह में ऋषभ स्वर वर्जित है। अवरोह संपूर्ण है अतः इस राग की जाति षाड़व–संपूर्ण है। इस राग का वादी स्वर गंधार एवं संवादी स्वर धैवत है गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।

खमाज एक अत्यंत लोकप्रिय राग है। शास्त्रीय संगीत के ध्रुपद, खयाल, गत तथा, तराना इत्यादि के अलावा उपशास्त्रीय संगीत के ठुमरी दादरा, भजन, लोकगीत, ग़जल इत्यादि सभी विधाओं में राग खमाज का प्रचुर प्रयोग होता है।

थाट – खमाज

स्वर – दोनो निषाद शेष स्वर शुद्ध (आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद)

वार्जित स्वर – आरोह में ऋषभ, अवरोह संपूर्ण

जाति – षाड़व–संपूर्ण

वादी – गंधार

संवादी – धैवत

गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह – सा ग, म प, ध नि सां

अवरोह – सां नि ध, प, म, ग, रे, सा

स्वरूप – नि़ सा, ग म प, ग म ग, रे सा

वृंदावनी सारंग

वृंदावनी सारंग सारंग अंग का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग में गंधार तथा धैवत सर्वथा वर्जित है। अर्थात इस राग की जाति औड़व–औड़व है।

इस राग में दोनों निषाद का प्रयोग होता है। आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद। वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी पंचम है। गायन/वादन समय दिन का द्वितीय प्रहर है।

थाट – काफी,

स्वर – दोनों निषाध (आरोह में शुद्ध निषाद व अवरोह में कोमल निषाद शेष स्वर शुद्ध)

वार्जित स्वर – गंधार व धैवत

जाति – औड़व–औड़व

वादी – ऋषभ

संवादी – पंचम

गायन/वादन समय – दिन का द्वितीय प्रहर

राग बिहाग

''कोमल मध्यम तीख सब, चढ़ते रिध को त्याग। गनि वादी संवादि ते, जानत राग बिहाग।।''

राग बिहाग उत्तर भारतीय संगीत का एक सुप्रसिद्ध एवं सर्वप्रिय राग है। यह थाट पद्धति के अनुसार बिलावत थाट का राग है। इसमें दोनों मध्यम प्रयुक्त होते है। शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। इस राग का वादी स्वर गंधार है तथा संवादी निषाद है। बिहाग के आरोह में ऋषभ व धैवत स्वर वर्जित है तथा अवरोह सम्पूर्ण है।

अतः इसकी जाति औड़व सम्पूर्ण कही जाती है। पुराने जमाने में इस राग में तीव्र मध्यम का प्रयोग बिल्कुल नहीं होता था परन्तु वर्तमान में तो यह प्रयोग लगभग आवश्यक सा हो गया है। तीव्र मध्यम का प्रयोग हमेशा पंचम के साथ ही होता है। जैसे प मे ग म ग या मे प ग म ग इसी प्रकार शुद्ध माध्यम का प्रयोग गंधार के साथ होता है जैसे ग म ग सा या ग म प नि सां।

थाट – बिलावल

स्वर – दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

आरोह में रे व ध वर्जित, अवरोद संपूर्ण

जाति – औड़व–संपूर्ण

वादी – गंधार

संवादी – निषाद

गायन/वादन समय – रात्रि का दूसर प्रहर

राग माल कौंस

''कोमल सब, पंचम ऋषभ, दोऊ बरजित कीन्हा।
स म संवादी ते, मालकंस को चीन्ह''।

राग मालकोंस भारतीय संगीत के सबसे प्रसिद्ध रागों में से है। यह भैरवी थाट से उत्पन्न राग है। इस राग में ऋषभ और पंचम दोनों स्वर वर्जित है।

अतः इसकी जाति औड़व–औड़व है। गंधार, धैवत और निषाद कोमल हैं, मध्यम शुद्ध है। इस राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। गायन समय शास्त्रोंक्त सिद्धांत के आधार पर रात्रि का तीसर प्रहर है, परन्तु इसकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि इसे रात्रि के किसी भी वक्त गाया बजाया जाता है। यह एक गंभीर प्रकृति का राग है।

थाट – भैरवी

वर्जित स्वर – रे व प

विकृत स्वर – ग, ध, नि कोमल शेष स्वर शुद्ध

जाति – औड़व–औड़व

वादी – मध्यम

संवादी – षड्ज

गायन समय – रात्रि का तृतीय प्रहर

आरोह – नि सा ग, म ध नि सां

अवरोह – सां नि ध, म, ग, सा

मुख्य बिन्दु

? भैरवी राग भैरवी थाट का आश्रय राग है। इसमें रे ग ध नी कोमल है। मध्यम वादी तथा षड़ज संवादी है। अतः गायन समय प्रातः काल शास्त्रोक्त है। परन्तु ऐसी परंपरा है कि किसी भी समय कार्यक्रम के अंत में भैरवी राग गाया जा सकता है।

? राग बिहाग उत्तर भारतीय संगीत का एक सुप्रसिद्ध एवं सर्वप्रिय राग है। यह थाट पद्धति के अनुसार बिलावत थाट का राग है। इसमें दोनों मध्यम प्रयुक्त होते है। शेष सभी स्वर शुद्ध है। इस राग का वादी स्वर गंधार है तथा संवादी निषाद है। बिहाग के आरोह में ऋषभ व धैवत स्वर वर्जित है तथा अवरोह सम्पूर्ण है।

? भूपाली का समप्रकृति राग देशकार है । भूपाली के वादी संवादी ग ध हैं एवं देशकार के वादी संवादी ध ग है। भूपाली कल्याण थाट जनित है जबकि देशकार बिलावल थाट जनित है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. नि प, म रे, नि़ सां स्वर समूह किस राग का है–
   (अ) माल कौंस (ब) वृन्दावनी सारंग (स) भैरवी (द) बिहाग
2. भैरवी के वादी संवादी है
   (अ) सा, म (ब) म, सा (स) सा, प (द) प, सा
3. बिहाग कौन से थाट का राग है–
   (अ) खमाज (ब) कल्याण (स) बिलावल (द) मारवा

उत्तरमाला– (1) ब (2) ब (3) स

प्रश्न–

1. खमाज थाट का आश्रय राग कौनसा है?
2. राग बिहाग के वादी संवादी स्वर क्या हैं?
3. धनीध म ग म ग सा यह स्वर समुदाय किस राग का है?
4. प ध प, ग म गरे सा इस स्वरावली से राग को पहचानिए।
5. राग भूपाली की पकड़ लिखिए।
6. राग वृन्दावनी सारंग का परिचय लिखिए।
7. राग भैरवी का संपूर्ण विवरण दीजिए।

अभ्यास कार्य

? सभी थाटों के स्वरों का अध्ययन करना तथा उनको गाने व बजाने का अभ्यास करना।

? पाठ्यक्रम की रागों के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा बजाए रिकार्ड सुनना।

रागों की चित्रात्मक अभिव्यंजना